L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A. PART- of
B.A. PAPER - (1)
PSYCHOLOGY (Honours)
Social Psychology
TOPIC- Definitions of Thinking

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor
Guest Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar.d.08.2018@gmail.com

चिंतन बुद्धि एक अमूर्त उच्चस्तरीय जटिल मानसिक क्रिया है। अतः इसकी संक्षिप्त परिभाषा देना कठिन है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसकी परिभाषा अलग-अलग ढंग से दी है। अतः किसी एक सर्वमान्य परिभाषा को स्वीकार करने से पहले विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई कुछ परिभाषाओं की चर्चा करना उपयुक्त होगा। इस विषय की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

जन साधारण के अर्थ में (common sense view) चिंतन का अर्थ विचार, मत या विश्वास अथवा कल्पना को प्रतिबिंबित करने अथवा उसकी मनःस्थिति से है। सामान्य तौर पर इसका तात्पर्य मन में होनेवाली किसी प्रकार की क्रिया से लिया जाता है।

पर जनसाधारण अर्थ में चिंतन का वास्तविक स्वरूप बिलकुल स्पष्ट नहीं होता इसका कारण संभवतः यह है कि चिंतन की क्रिया में सन्निहित प्रक्रियाएँ अदृश्य होती हैं तथा प्रत्यक्ष रूप से उनका निरीक्षण करना भी संभव नहीं इसलिए वास्तविक स्वरूप को समझना मुश्किल है। इसका कारण यह है कि प्रायः हम सोचते हैं लेकिन मानव ही कभी यह सोचने की कोशिश करते हैं कि सोचना या चिंतन किसे कहते हैं। अतः जनसाधारण में प्रचलित होने कुछ अस्पष्ट होने चिंतन नहीं कहते, इसीलिए चिंतन का वास्तविक स्वरूप जन साधारण के विचारों से स्पष्ट नहीं है। अतः हमें मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर दृष्टिपात करना होगा।

मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गई कुछ परिभाषाएँ।

(1) रॉस (ज्ञानात्मक) - चिन्तन एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया या एक ऐसी क्रिया है जो मुख्यतः ज्ञानात्मक होती है।

और जिसके साथ व्यक्ति किसी वस्तु या किसी वस्तु या किसी वस्तु के कुछ पहलुओं या परिस्थितियों से अवगत होता है।

यद्यपि यह परिभाषा भी जेम्स व्याख्या के विचारों की ही तरह अस्पष्ट है। फिर भी इस परिभाषा में चिन्तन संबंधी कुछ महत्वपूर्ण संकेत मिलते हैं। उदाहरणार्थ चिंतन क्रिया में कुछ प्रक्रियाएँ होती हैं। लेकिन वे प्रक्रियाएँ ऐसी नहीं हैं। जिनका संबंध वर्तमान वातावरण में उपस्थित वस्तुओं के ज्ञान से रहता है। इसका कारण यह है कि उपर्युक्त परिभाषा में चिंतन को अन्य प्रकार के व्यवहार-संबंधी प्रक्रियाओं से संबंधित भी बताया गया है। कहने का अभिप्राय यह है कि चिंतन इतनी मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं, जैसे सीखना, प्रत्यभिज्ञान, कल्पना, स्मरण आदि से बिलकुल स्वतंत्र या पृथक नहीं है। जैसे प्रत्यभिज्ञान को ही लें, जब हम बाह्य जगत में उपस्थित किसी वस्तु का प्रत्यभिज्ञान करते हैं, तब कुछ समय भी चिंतन होता है। और जब हम चिंतन करते हैं तब कुछ समय प्रत्यभिज्ञान भी होता है। इसी प्रकार, चिंतन का संबंध संवेग, प्रेरणा, सीखना आदि व्यवहारों से भी है।

(ii) वारेन - (Warren) चिंतन व्यक्ति के समक्ष उपस्थित समस्या से उत्पन्न होने वाली प्रतीकात्मक स्वरूप की एक विचारात्मक क्रिया है जिसमें समस्या के प्रभाव एवं निर्देशन में कुछ प्रत्यक्ष और मूक होते हैं और अंतत समस्या का समाधान हो जाता है। उपर्युक्त परिभाषा में चिंतन को प्रतीकात्मक और विचारात्मक क्रिया कहा गया है। तथा यह भी स्पष्ट किया गया है कि इस मानसिक क्रिया का प्रारंभ किसी समस्या के उत्पन्न होने से होता है जिसके प्रभाव एवं निर्देशन में प्रत्यक्ष और मूक ही क्रिया द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है।

(iii) उच्चस्तरीय स्तर पर समस्या समाधान की आंतरिक प्रणाली ही चिंतन है।

प्रतीकों की सहायता से समस्या का समाधान करना चिंतन है।

(iv) डैशियल (Dashiell) उच्चस्तरीय स्तर पर समाधान की आंतरिक प्रणाली ही चिंतन है। डैशियल ने आगे और कहा है। प्रतीकों की सहायता से समस्या का समाधान करना चिंतन है।

(v) जोसविक (Josswick) चिंतन की सामान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि- इसमें हम सांसारिक वस्तुओं, घटनाओं अथवा उनके प्रतिनिधियों के अनुभवों के बीच व्यवस्था स्थापित की जाती है।

(vi) रास एवं हैवमैन - चिंतन को प्रतिमाओं, प्रतीकों, प्रत्ययों, नियमों या अन्यान्य किसी मध्यस्थ रचनाओं के मानसिक उलट-पुलट या हेर-फेर (हस्त-लाघव) की प्रक्रिया के रूप में सबसे अच्छे ढंग से वर्णित किया जा सकता है।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में चिंतन को एक प्रतिनिध्यात्मक या प्रतीकात्मक मानसिक प्रक्रिया कहा गया है। जिसका संबंध वर्तमान में उपस्थित समस्या को मानसिक रूप से अनुभव करने, उसके समाधान की आवश्यकता की चेतना होने तथा उस दिशा में मस्तिष्क में विद्यमान पूर्व अनुभवों के प्रतीकों की मध्यस्थता द्वारा समस्या का समाधान ढूंढने से रहता है। अतः निष्कर्ष रूप में चिंतन की परिभाषा इस तरह दी जा सकती है। चिंतन एक उच्चस्तरीय अव्यक्त प्रतीकात्मक मानसिक प्रक्रिया है। जिसका संबंध किसी समस्या का प्रत्यक्षीकरण करने तथा उसका उपयुक्त हल ढूंढने से रहता है।

चिंतन के दो प्रमुख वर्ग किए सकते हैं आत्मविमोही चिंतन एवं वास्तविक यथार्थ चिंतन आत्मविमोही चिंतन का संबंध मुख्य रूप से व्यक्तिगत आवश्यकताओं इच्छाओं तथा भावों से रहता है। कि

बाह्य जगत की वास्तविकताओं से वास्तविक चिंतन का संबंध बाह्य जगत की वस्तुओं या व्यक्तिगत परिस्थितियों की माँगों से रहता है। अतः स्पष्ट है कि आत्मविमोही चिंतन व्यक्ति की निजी आवश्यकताओं, इच्छाओं, भावों आदि से प्रभावित होकर प्रेरित होता है। तथा इसमें संलग्न क्रियाओं का उद्देश्य आत्मसंतोष प्राप्त करना होता है। इसमें होने वाली क्रियाओं का वास्तविकता से संबंध नहीं रहता, परंतु वास्तविकता चिंतन में संलग्न क्रियाएं वास्तविक परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली वास्तविक समस्याओं से प्रभावित होकर प्रेरित होती है। इसमें व्यक्ति ऐसी क्रियाओं के बारे में सोचता या विचारता है जिनसे उसकी किसी यथार्थ समस्या का समाधान संभव है। इस अर्थ में चिंतन का यह प्रकार उत्पादक स्वरूप का है। स्पष्ट है कि चिंतन के ये दोनों प्रकार प्रेरित स्वरूप के है। क्योंकि इन दोनों प्रकार के चिंतन को थोड़ा विस्तार में वर्णित किया जा रहा है। आत्मविमोही चिंतन को काल्पनिक चिंतन की भी संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार के चिंतन में तर्कहीन व्यक्ति केवल काल्पनिक विचारों की दुनिया में ही विचरण करता है। स्वैर कल्पना रचनापूर्ण चिंतन, दिवास्वप्न आदि आत्मविमोही चिंतन के ही विभिन्न रूप है। उदाहरण के लिए स्वप्न को लें, स्वप्न एक सामान्य घटना है। जिसमें व्यक्ति ऐसी घटनाओं को देखता है जिनका संबंध स्वप्न दृष्टा के व्यक्तिगत पक्षों से रहता है। इस संबंध में अनेक आविष्कारकों एवं वैज्ञानिकों का कहना है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date - 25/09/2020
Sub - Psychology